भिखारी की आत्मकथा

Bhikhari Ki Aatmakatha

भीख मांगना हमारे भारत में एक आम बात है। यहां हर जगह भिखारी देखने को मिलते। है। उन्होंने अपने चेहरों पर राख लगाई होती है। उन्होंने फटे हुए कपड़े पहने होते हैं। अपने हाथा में भीख मांगने वाले कटोरे पकड़े होते हैं। वह इस प्रकार से रोते हैं जैसे बहुत मुसीबत में हों। जब भी कोई राह जाता व्यक्ति गुजरता है तो वे उससे एक या दो रुपये मांगने का प्रयास करते है.

भिखारी अधिकतर प्राचीन स्थानों पर जाकर भीख मांगते हैं। वह धार्मिक स्थानों पर बड़ी मात्रा में देखने को मिलते हैं। कई तो घर-घर जाकर मांगते हैं। वह रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैंड पर भी देखने को मिलते हैं। वह तब तक आपका पीछा नहीं छोड़ते जब तक आप उन्हें कुछ पैसा न दे दो। आप जहां भी जाते हैं ये आपके पीछे आने लगते हैं। कई बार तो इनसे पीछा छुड़ाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

भिखारी असली तथा नकली दोनों प्रकार के होते हैं। किन्तु अधिकतर भिखारी नकली ही होते हैं। वे भिखारी इसलिए बनते हैं कि उन्हें कोई काम न करना पड़े। भीख मांगना उनके लिए पैसे कमाने का आसान साधन बन जाता है। कुछ लोगों ने भीख मांगना अपना व्यापार बना रखा है। यह लोग समाज पर दाग होते हैं। ये देश की अर्थशास्त्र पर भार होते हैं।

भिखारियों की कोई इज्जत नहीं होती। अधिकतर भिखारी धोखेबाज़ होते हैं। वे गनाह करते हैं। वे चोरी करते हैं। पकड़े न जाएँ इसलिए वे खुद को भिखारी के रूप में पेश करते हैं। कुछ भिखारी सट्टेबाज तथा शराबी होते हैं। जो भी पैसा वे दिन में भीख मांग कर इकट्ठा करते हैं, रात को उससे जूआ खेल लेते हैं तथा शराब पीकर उड़ा देते हैं।

भीख मांगना एक श्राप है। यह हमारे देश के साफ-सुथरे नाम पर एक दाग है। सरकार को इसे दूर करने के लिए कदम उठाने चाहिएं। कुछ गरीब घरों का निर्माण करवाना चाहिए। अपाहिज लोगों को मुफ्त खाना तथा कपड़े देने चाहिएं। शारीरिक रूप से सक्षम भिखारियों से काम करवाना चाहिए।